om 24 final Delhi_Page 1 and 2 18/03/2015 10:54 Page 8

सादुलशहर-राज.। ज्ञानचर्चा के बाद डॉ. रामप्रताप,कैबिनेट मिनिस्टर, सिंचाई एवं जल संसाधन को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. माधवी।

लखनऊ-जानकीपुरम। चार दिवसीय 'विश्व शांति मेला' का उद्घाटन करते हुए पूर्व पुलिस कमिश्नर रिज़वान अहमद तथा राष्ट्रीय महिला आयोग की अध्यक्षा ज़रीना उस्मानी। साथ हैं ब्र.कु. बहनें व अन्य।

हाथरस। 'किसान सशक्तिकरण अभियान' के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए पूर्व एम.एल.सी. विवेक बंसल, ब्र.कु. रीना, ब्र.कु. राजेन्द्र, ब्र.कु. यादराम तथा अन्य।

हरिद्वार। 79वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती पर आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए महामण्डलेश्वर स्वामी अर्जुनपुरी,अध्यक्ष,तुलसी मानस मंदिर। साथ हैं स्वामी जमुना दास,रंगी राम आश्रम तथा ब्र.कु. मीना।

गया-ए.पी.कॉलोनी। महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर निकाली गई शोभायात्रा के दौरान उपस्थित हैं राजकुमार सिंह,सेकेण्ड ऑफिसर इन मरचेंट नेवी, एस.पी. जैसवाल,मैनेजर,सिविल,आयरन इंटरनेशनल लि., सीनियर एडवोकेट ब्र.कु. अरुण, ब्र.कु. सुनीता तथा अन्य।

फरीदाबाद। महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर आयोजित आध्यात्मिक कार्यक्रम के दौरान मंचासीन ब्र.कु. लक्ष्मी तथा शहर के गणमान्य जन।

अपने अनुभव और मान्यताओं को बदलो

भगवान ने यज्ञ का महत्व बतलाया कि कर्मयोग मानव का सनातन कर्म है, कर्त्तव्य है। यहाँ बहुत सुंदर गुह्य रहस्य स्पष्ट किया गया है कि यज्ञ की प्रक्रिया ही कर्म है। अब इसका मतलब ये तो नहीं है कि हम सभी गृहस्थियों को कहें कि हर रोज़ नित्य यज्ञ करते रहें। किसी के पास इतना समय कहाँ है? लेकिन यज्ञ का भावार्थ यहाँ क्या है? इसको थोड़ा स्पष्ट करना पड़ेगा।

आज जब भी कोई व्यक्ति यज्ञ करता है तो किसलिए करता है? यज्ञ किया जाता है, शुद्धिकरण के लिए। यदि नया घर लिया है, तो नया घर लेते ही हम वहाँ पर रहने जाने से पहले यज्ञ करते हैं, ताकि वहाँ के वातावरण का शुद्धिकरण हो जाये। जब भी कोई ऐसी कष्ट की बात आती है, तो हम यज्ञ करते हैं कि शुद्धिकरण हो जाये, ताकि जो बाधा है, वह समाप्त हो जाए। इसी भाव से यज्ञ किया जाता है। तो यज्ञ की प्रक्रिया ही कर्म है। तो शुद्धिकरण के लिए भी जो यज्ञ किया जाता है, उसका नाम है यज्ञ। उसमें हमेशा तीन चीज़ों की आहुति डाली जाती है। जौ, तिल और घी। लेकिन आज न जाने संसार में कितने यज्ञ हो गये? कितने जौ, तिल और घी को हमने स्वाहा कर दिया होगा? फिर भी संसार में शुद्धिकरण नहीं हुआ क्योंकि स्थूल प्रक्रिया को हम अपनाते गए हैं, उसके सूक्ष्म भावार्थ को हमने कभी समझा ही नहीं। 'जौ' लम्बा होता है, ये तन का प्रतीक है, 'तिल' सूक्ष्म होता है, जो कि मन का प्रतीक है और 'घी' तरल होता है जो कि धन का प्रतीक है। मनुष्य जीवन का अगर अशुद्धिकरण हुआ है, तो उसके ये तीन कारक हैं। उदाहरण के लिये, आज जैसे किसी के जीवन में टेंशन आया, उसकी शांति नष्ट हो गयी, संगदोष में वो आ गया। संग ने उसको कहा अरे! सिगरेट पी लो, ठीक हो जायेगा तेरा टेंशन दूर हो जायेगा। वह व्यक्ति सिगरेट पीता है। सिगरेट पीने के बाद, ये पहली प्रक्रिया शुरु हुई अशुद्धिकरण की ओर। अब दूसरे दिन जैसे ही कोई मन की परेशानी बढ़ती है किसी बात को लेकर तो क्या होता है? वो सोचता है कि एक सिगरेट पी लेना चाहिए, कल अच्छा लगा था। अर्थात् मन गया कहाँ? अशुद्धि के मार्ग पर। जैसे ही मन गया तो वहाँ से उठकर व चलकर वह दुकान तक जाता है । तो उसका तन गया अशुद्धि के मार्ग पर। जैसे ही तन गया उसके बाद, पैसा देकर सिगरेट खरीदता है, तो धन भी गया और जीवन में अशुद्धियां आने लगीं। उसके तीन कारण हैं, पहले मन जाता है, फिर तन जाता है और फिर धन जाता है। इसी के आधार पर जीवन में अशुद्धि आई। इसलिए इस अशुद्धि को खत्म करने के लिए व शुद्धिकरण की प्रक्रिया के लिए वास्तव में मन के विचारों को शुद्ध बनाओ। अपने तन को हमेशा सही रास्ते पर ले जाओ और अपने धन को हमेशा सत्कार्य में सफल करो, तब शुद्धिकरण की प्रक्रिया होगी। इस भाव को किसी ने समझा नहीं और जब इस तरीके से शुद्धिकरण करना नहीं आया, तो तन के प्रतीक के रूप में जौ (छिलके वाला होता है) को स्वाहा कर दिया। ये छिलका है इतना बड़ा आत्मा के ऊपर चढ़ा हुआ उसको स्वाहा कर दिया, तिल को स्वाहा कर दिया और घी को स्वाहा कर दिया और सोचते हैं शुद्धिकरण हो गया। भावार्थ यह है कि हम इतनी प्रथाओं को अपनाये हुए हैं। लेकिन इसके भावार्थ को हमने कभी समझा ही नहीं। जब इसको यथार्थ रूप में हम जीवन में अपनाते हैं तो यज्ञ की प्रक्रिया ही यथार्थ कर्म है। अर्थात् शुद्धिकरण के लिए जो किया जाता है, वही कर्म है। आत्मोन्नति के लिए जो किया जाता है वही यथार्थ कर्म है। इसलिए तीनों को शुद्ध करने की आवश्यकता है। इस तरह का यज्ञ अर्थात् हमारा जीवन एक यज्ञ है। जब ये जीवन एक यज्ञ बन जाता है तो उसमें नित्य शुद्धिकरण की आवश्यकता होती है। इसलिए भगवान ने सबसे पहले, कर्मयोग के विषय में भी यही बताया कि संगदोष से बचे रहो। कहा हे अर्जुन! संगदोष से बचे रहो क्योंकि आज की दुनिया में अशुद्धि के मार्ग पर ले जाने वाला संग ही होता है। तब आगे बताया कि यज्ञ की प्रक्रिया ही कर्म है, उससे यज्ञ पूर्ण होता है। इससे जीवन सम्पूर्ण होता है। इसके अतिरिक्त जो कुछ भी करते हैं। वह बंधन है वो आत्मा को बांधने वाले कर्म हैं। यज्ञ पूर्ति के लिए फिर से कहा कि संग-दोष से अलग रहकर कर्म का आचरण करो।

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य

-राजयोग शिक्षिका ब्र.कु.उषा

भय से मैं को...

-पेज 2 का शेष

कहते हैं। ''जो मैं हूँ वैसे आप भी हो।'' उपनिषद भी यही बात बताता है जो मैं हूँ वैसे ही आप भी हो..., ज़रा भी अंतर नहीं है। डरते-डरते युवा सिंह ने पानी में देखा, उसको एक स्वप्न जैसा लगा। आज तक उसने तो ये मान रखा था कि वो एक भेड़ है, और आज यहां कुछ अलग ही दिख रहा है। थोड़ी देर तक तो उसे विश्वास ही नहीं हुआ। महान पुरुष भी इस तरह की बात करके प्रतिति कराये तो भी क्षणभर वो बात हम स्वीकार नहीं करते, फिर भी सत्य तो सत्य ही है। उसे नकार कैसे सकते हैं! सिर्फ बातचीत हो तो भी ठीक, लेकिन सामने तो सत्य दिखता है। सत्य स्वयं का ही अनुभव है, उससे इंकार कैसे किया जा सकता है!

उस वृद्ध सिंह ने गर्जना की, उसकी गर्जना सुनते ही सरोवर में अपना प्रतिबिंब देख रहे युवा सिंह से रहा नहीं गया। अंदर में सोया हुआ सिंह जैसे कि जग गया और उसने भी ऐसी गर्जना की, और सारा वातावरण गूंज उठा। सिंह तो वही था, सिर्फ भेड़ होने की जो धारणा मन में थी, वो धारणा, वो भ्रान्ति टूट गई। संस्कार कितने भी गहरे हों तो भी वे ऊपरी ही होते हैं। वे आत्मा नहीं बन सकते। कितनी भी कोशिश करें, आप तो फलानी जाति के नहीं है, ये एक ऊपर का भ्रम है, एक ख्याल है। यदि हिन्दु के घर में जन्मे बच्चे को धर्म का बोध न हुआ हो और उसे मुसलमान के घर में रख के आ जावें तो वो मुसलमान की तरह ही बड़ा होगा और मुसलमान की रीति-रस्म की तरह से ही वो जीयेगा और हिन्दु का विरोध भी करता रहेगा। इसी तरह मुसलमान होना भी एक ऊपर-ऊपर की मान्यता है। ये दृढ़ हुआ एक संस्कार है, चमड़ी की गहराई में वो तो जा नहीं सकता। आत्मा न तो हिन्दु है, ना मुसलमान, न सिक्ख, न पारसी, आत्मा कभी भी इसाई नहीं हो सकती, न जैन, न यहदी, आत्मा शरीर भी नहीं है। वह अमेरिकन व चीनी भी नहीं तो भारतीय कैसे हो सकती है? जो समझता है उसके लिए सब खेल है और जो नहीं समझता उसके लिए ही ये सब झगड़े हैं। राजनीति का ज़हर, सम्प्रदाय का जुनून मानव की सच्चाई से परिचित होने नहीं देता। लेकिन सत्य को समझने के लिए जो तत्पर हैं वो ऐसे किन्हीं चक्करों में फंसते नहीं हैं। सही धर्म व्यक्ति को ऐसे सब चक्करों से बाहर ले आता है। अध्यात्म आँख खोलने का एक विज्ञान है। जब तक आँख बंद है तब तक ही हिन्दु, मुसलमान, इसाई, पारसी, सिक्ख, ऐसे स्वप्न चलते हैं। आँख खुलने के बाद जो दिखता है, वो मान्यताओं से अलग ही होता है, और इसीलिए आध्यात्मिक पुरुषों की बातें कोई समझता नहीं। सुनते बहुत लोग हैं लेकिन समझकर स्वीकार करते हैं कौन!''

फिकर सबको खा गई, फिकर का सब पीर।
फिकर की फाकी करे, उसका नाम फकीर।

सीतापुर। महाशिवरात्रि के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम के दौरान केक काटते हुए एम.एल.सी. भारत त्रिपाठी। साथ हैं पूर्व चेयरमैन आशीष मिश्रा, ब्र.कु. योगेश्वरी तथा अन्य।

राँची। 'द फ्यूचर ऑफ पॉवर' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए उद्योगपति निज़ार जुमा, ब्र.कु. निर्मला, एंथनी फीलिप्स, सूर्य निर्मल इन्फ्रास्ट्रक्चर के अध्यक्ष सूर्यभान सिंह, एच.ई.सी. के वित्त निदेशक एस.के. पटनायक, बिरसा कृषि विश्वविद्यालय के उपकुलपति जॉर्ज जॉन, डॉ. संजय, आयकर आयुक्त शिशीर धमीजा व अन्य।